# प्रवास में

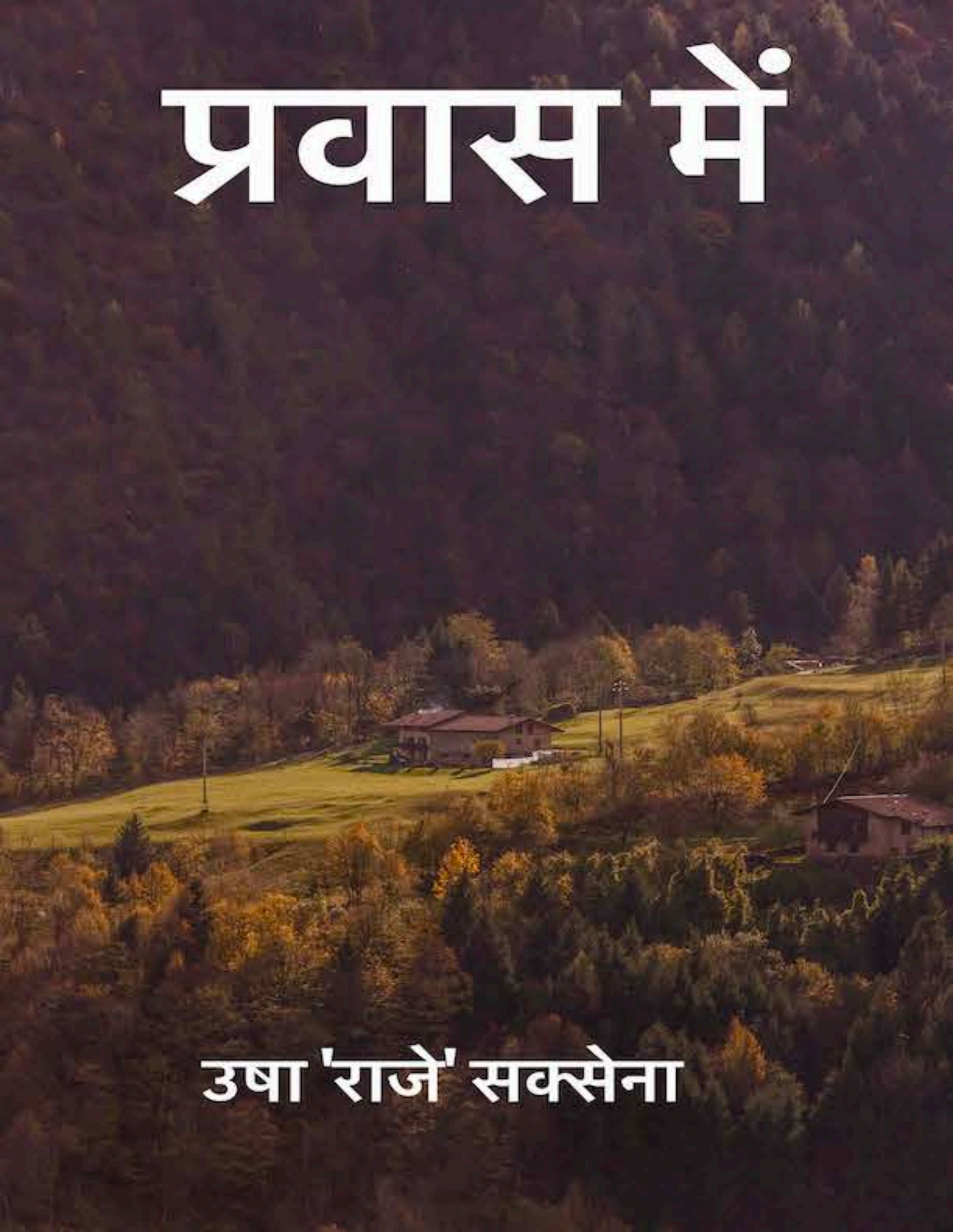

उषा 'राजे' सक्सेना

# प्रवास में

## उषा राजे सक्सेना

## उषा राजे सक्सेना

हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी उषा राजे सक्सेना का लेखन (हिंदी व अंग्रेजी में) इस सदी के सातवें दशक में साउथ लंदन के स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं एवं रेडियो प्रसारण के द्वारा प्रकाश में आया। तदनंतर आपकी कविताएं कहानियाँ एवं लेख भारत अमेरिका और यूरोप के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। आपकी कई रचनाएँ विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। कुछ रचनाएँ जापान के ओसाका विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं।

आप ब्रिटेन की एकमात्र हिंदी साहित्यिक पत्रिका 'पुरवाई' (त्रैमासिक) की सह-संपादिका तथा हिंदी समिति यू.के. की उपाध्यक्ष हैं। तीन दशक तक आप ब्रिटेन के बॉरो ऑफ मर्टन की शैक्षिक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर कार्यरत रही हैं।

विगत वर्षों में भारत की विभिन्न संस्थाओं में आपको प्रवास में हिंदी साहित्य और उसके प्रचार-प्रसार सेवा के लिए सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'विश्वास की रजत सीपियाँ" इंद्रधनुष की तलाश में' (काव्य- संग्रह); 'मिट्टी की सुगंध' (ब्रिटेन के प्रवासी भारतवंशी लेखकों का प्रथम कहानी- संग्रह), 'प्रवास में...' (कहानी-संग्रह)।

कहानीकार का संवेदन संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करता है। वह उसी में जीता है, साँस लेता है। प्रवासी लेखक अपने घर-परिवार, देश और मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देश-काल और परिवेश में चला जाता है। वहाँ उसके नए संस्कार बनते हैं, नए दृष्टिकोण बनते हैं। माहौल बदल जाने से उसकी जिंदगी में बहुत सी पेचीदगियाँ आ जाती हैं। उसकी मान्यताएँ बदलने लग जाती हैं। यहीं द्वंद्व के आरंभ का प्रारंभ होता है। और यहीं कहानियाँ जन्म लेती हैं।....

ये कहानियाँ भारतीय मूल्यों और मान्यताओं के चौखटे में संभवत: सही नहीं बैठेंगी; परंतु इन मूल्यों और मान्यताओं के कारण ही एक परिवेश का साहित्य दूसरे परिवेश के साहित्य से अलग नहीं हो जाता। इन कहानियों के भीतर रिसी हुई गहरी मानवीय संवेदना उन्हें एक-दूसरे से जोड़े रखती है। सात समंदर पार होने पर भी यही मानवीयता इन कहानियों को समयातीत, कालेतर और समयसापेक्ष बनाती है।

*जीवनसाथी राजे*

*को*

*जिनके साथ जीवन की अतल*

*गहराइयों में गोताखोरी करती रही।*

# भूमिका

उषा राजे सक्सेना की ये कहानियों सात समंदर पार बसे भारतीय जन-जीवन की मर्मस्पर्शी गाथाएँ हैं। ऊपरी तौर पर देखने में किस्सागोई सी लगनेवाली इन कहानियों को लेखिका ने अपनी संवेदनात्मक ऊर्जा से एक नए किस्म का रचनात्मक आयाम दिया है। कहानियों के शिल्प से उनकी यायावरी चित्रवृत्ति का अनायास आभास होता है। रचनाशील व्यक्तियों की स्वाभाविक खासियतें इन कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। क्योंकि अकसर सफर में भी अनेक बार कोई ऐसा साथी बन जाता है जिसकी आपबीती एक मुकम्मल कहानी सी लगती है। हम पार्क में हों, ट्रेन में हों, बस में हों या फिर हवाई जहाज में हों, एक सजग कथाशिल्पी को हरेक परिस्थिति में कहानी दिखाई देती है। उषा राजे सक्सेना ने ये कहानियाँ इसी यात्रावृत्त शैली में लिखी हैं। संभवत: यही बड़ा कारण है कि इनकी भाषा सरल, सचित्र और गतिमान है। इस भाषा में संप्रेषणीयता की भरपूर गरमाहट है।

चूंकि इन दिनों साहित्य का एक बड़ा संकट संप्रेषणीयता है, जो कि सीधे तौर पर भाषा, शिल्प और अत्यधिक विचार-प्रधान होने से प्रभावित है, जिसे हम साधारण और सहज पाठक की संज्ञा से अभिहित करते हैं, वह इसी जटिल बोध से घबराकर साहित्य से अलग-थलग पड़ गया है। आज के उभरते साहित्यकारों के समक्ष यही सबसे बड़ी चुनौती है कि वे सच्चे और गंभीर साहित्य के खोए हुए सहृदय पाठकों को पुन: कैसे अपनी गिरफ्त में लेते हैं। गंभीर और सर्जनात्मक साहित्य कैसे समाज की मुख्यधारा में मशविरा का विषय बन सके, यह नए साहित्यकारों की नई चिंता होनी चाहिए। सूचना क्रांति ने यदि सुविधाएँ मुहैया कराई हैं तो रचनात्मकता को संक्रमित भी किया है, और रचनाकार इसी कारण संक्रमण में हैं।

उषा राजे सक्सेना की इन कहानियों की एक सबसे बड़ी खासियत यह है कि वह कहानियों में ख़ुद किसी तरह के घटनाक्रम या चरित्र उद्‌घाटन का ताना-बाना नहीं बुनतीं, उनके पात्र स्वयं उनके पास चलकर अपना रहस्योद्‌घाटन करते हैं। जो अकसर सफर में घटित होते हैं। यहाँ पात्र अपने चरित्र और किस्से को बयाँ करते है। इन कहानियों में किसी तरह का मनोविश्लेषण या विचार-विश्लेषण नहीं किया गया है। फ्लैश बैक का प्रयोग सभी कहानियों में है। यद्यपि उषा राजे की ये कहानियाँ चरित्र उद्‌घाटन की कहानियाँ नहीं हैं, परंतु मानवीय जीवन की

ऊष्मा और सहिष्णुता से परिपूर्ण हैं। पश्चिम की धरती पर लिखी जाकर भी नितांत पूर्वी संवेदना और शैली से संपृक्त हैं ये कहानियाँ।

संग्रह की सभी दस कहानियों की विषय-वस्तु और परिवेश भिन्न होकर भी इनका आपसी समभाव यही है कि ये संबंधों को नए ढंग से जीने का अभ्यास है। 'शुकराना', 'यात्रा में', 'अभिशप्त' और 'समर्पिता'-इस संग्रह की खूबसूरत कहानियों में से हैं। ये कहानियाँ पति-पत्नी, परिवार और स्वाध्याय के लिए ईमानदार और संवेदनशील प्रतिबद्धता को बड़े महत्त्व के साथ रेखांकित करती हैं। विदेश की धरती पर महत्वाकांक्षी जीवन जीते हुए भी प्राच्च सोच और अवधारणाओं से विलग न होने की चेष्टा ही उषा राजे के कल्पित या सच्चे पात्रों की विशेषता है। अपनी प्रभावोत्पादकता में ये कहानियाँ लोकप्रियता को प्राप्त कर सकनेवाली हैं। यद्यपि समकालीन हिंदी कहानियों के कलेवर में यह तत्व गौण है। समकालीन प्रवृत्तिवाली कहानियाँ पारिवारिक संदर्भों के दायरे में लिखी होकर भी संवेदना, विचार और विशेषार्थ से युक्त होती हैं। हो सकता है, उषा राजे की इन कहानियों में समकालीनता के ये तत्त्व क्षीण हों, परंतु हिंदी के खोए हुए सजग पाठकों के बीच उत्सुकता जगाने की पूरी क्षमता इनमें मौजूद है। विदेश में रहनेवाले भारतीयों की जीवन-शैली के दुःख-दर्द और तनाव के बोर में जितना भी हिंदी में लिखा गया है, उषा राजे की रचनाएँ उसी क्रम की एक सुखद समृद्धि समझी जानी चाहिए।

**कमलेश्वर**

## अपनी बात

कुछ कहना है इसलिए.....

अभी चिड़ियों को दाना देकर धूप-स्नान के लिए ईजी चेयर पर बैठी ही थी कि सिकामोर का एक बड़ा सा पीला पत्ता हवा के साथ अठखेलियाँ करता हुआ कटी पतंग की तरह जेरेनियम और एंटीराइनम की क्यारियों में जमकर बैठ गया। पास ही गीली मिट्टी में सिकुड़े-सिमटे बैठे स्लग के लिजलिजे बदन में कुछ हरकत हुई, वह सरकता हुआ आया और पत्ते पर बैठकर धूप सेंकने लगा। चेरी की डाल पर बैठी काले पंखों और लंबी पूँछवाली चिड़िया को उसका सुख से बैठना सुहाया नहीं। वह फुर्र से उड़ी और उसे चोंच में दबाकर सँकरी के चपटे पत्थर पर अखरोट की तरह पटक-पटककर तोड़ने लगी। खोल में बैठे स्नेल की क्या दशा और मनोदशा हो रही होगी, आगे उसका क्या हश्र होगा! अभी यही सब सोच रही थी कि कहीं से पड़ोसी फ्रैंक की बिल्ली निकिता चिड़िया पर झपटी....तभी फोन की घंटी हिनहिनाई और मैं उठकर अंदर भागी.... आगे क्या हुआ नहीं मालूम। कौन भोग बना, किसने किसको भोगा, कौन संतुष्ट हुआ, कौन असंतुष्ट, कौन जीता और कौन हारा....कुछ तो हुआ ही होगा, कुछ देखा, कुछ नहीं देखा, पर कुछ अनुमान तो लगा ही सकती हूँ....

यह संसार एक घट है। यहाँ प्रतिपल कुछ-न-कुछ घटता ही रहता है। ये घटनाएँ हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं। हमारे मन के अंदर भी प्रतिपल कुछ-न- कुछ घटता ही रहता है। हमारा चेतन और अचेतन मन दोनों ही हमारे घर, परिवेश, समाज, शहर, प्रांत, देश, विश्व में जो कुछ अच्छा-बुरा होता है उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। एक कथाकार की संवेदनाएं समय की धड़कन को अपने में समो लेती हैं। यह समोना कोई सचेत प्रक्रिया नहीं होती है जिसमें लेखक सचेत रूप से अपने समय के काल-बोध को पाठक तक पहुंचाने के लिए कहानी के माध्यम का उपयोग करे।

कहानीकार का संवेदन संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करता है। वह उसी में जीता है। साँस लेता है। प्रवासी लेखक अपने घर-परिवार, देश और मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देशकाल और परिवेश में चला जाता है। वहाँ उसके नए संस्कार बनते हैं, नए दृष्टिकोण बनते हैं। माहौल बदल जाने से उसकी जिंदगी में

बहुत सी पेचीदगियाँ आ जाती हैं। उसकी मान्यताएँ बदलने लग जाती हैं। यहीं द्वंद्व के आरंभ का प्रारंभ होता है। और यहीं मेरी कहानियाँ जन्म लेती हैं....

कहानी का शिल्प, रूप और सौष्ठव कोई अलग चीज नहीं होती है। कविता की तरह इसमें भी पहले वाक्य से ही अभिव्यक्ति अपने रूप में ढलने लगती है। कहानी अपने आप भाव और शब्दों के सहारे अपना शिल्पात्मक गठन करती हुई आगे बढ़ती है। कहानी का शिल्प या गठन कोई अलग चीज नहीं होती, जिसे मात्र प्रयोग के लिए प्रयुक्त किया जाए।

ये कहानियाँ भारतीय मूल्यों और मान्यताओं के चौखटे में संभवत: सही नहीं बैठेंगी; परंतु इन मूल्यों और मान्यताओं के कारण ही एक परिवेश का साहित्य दूसरे परिवेश के साहित्य से अलग नहीं हो जाता। इन कहानियों के भीतर रिसी हुई गहरी मानवीय संवेदना उन्हें एक -दूसरे से जोड़े रखती है। सात समुंदर पार होने पर भी यही मानवीयता इन कहानियों को समयातीत कालेतर और समय सापेक्ष बनाती है।

**-उषा राजे सक्सेना**

# अनुक्रम


प्रवास में 10

शुकराना 19

यात्रा में... 29

अभिशप्त 48

दायरे 67